

गुजरात का स्थापत्य

- गुजरात के स्थापत्य को सोलंकी उपशैली, चालुक्य उपशैली या मंडोवार उपशैली भी कहा जाता है।
- इसके तहत हनिदू मंदिरों के साथ-साथ जैन मंदिरों का भी निर्माण हुआ।
- अर्द्ध-गोलाकार पीठ और 'मंडोवार' गुजरात उपशैली की पहचान विशेषता हैं।
- वह अर्द्ध-गोलाकार संरचना जिसकी वजह से छत-शखिर अलग-अलग दिखाता है, उसे मंडोवार कहते हैं।
- माउंट आबू का आदनाथ मंदिर, तेजपाल मंदिर, पालतिना के सैकड़ों मंदिर, सोमनाथ मंदिर, मोढ़ेरा का सूर्य मंदिर आदि इस शैली के प्रमुख उदाहरण हैं।
- माउंट आबू पर बने कई मंदिरों में संगमरमर के दो मंदिर हैं- दलिवाड़ा का जैन मंदिर तथा तेजपाल मंदिर (अरबुदगरी के बगल में)।
- कुंभरिया के पार्श्वनाथ मंदिर में भी राजस्थान के मकरान से उपलब्ध काले और सपेद संगमरमर का इस्तेमाल किया गया है।
- माउंट आबू के मंदिरों का निर्माण सोलंकी शासक भीम सहि प्रथम के मंत्री दंडनायक वमिल ने करवाया था, इसी कारण इसे वमिलबसाही मंदिर भी कहते हैं।
- सोमनाथ मंदिर को सोलंकी शासकों की देन न मानकर गुरजर-प्रतहारों की देन माना जाता है।

